NEXT IAS

प्राचीन भारत का इतिहास

सिविल सेवा परीक्षा 2025

MADE EASY PUBLICATIONS
द्वारा प्रकाशित

MADE EASY Publications Pvt. Ltd.
कॉर्पोरेट कार्यालय: 44-A/4, कालू सराय
(हौज़ ख़ास मेट्रो स्टेशन के निकट), नई दिल्ली-110016
संपर्क सूत्र: 011-45124660, 8860378007
ई-मेल करें: infomep@madeeasy.in
विजिट करें: www.madeeasypublications.org

प्राचीन भारत का इतिहास

© **कॉपीराइट: Made Easy Publications Pvt. Ltd.**

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रतिलिपिकरण, पुनर्मुद्रण, प्रस्तुतीकरण और किसी ऐसे यंत्र में संग्रहण नहीं किया जा सकता, जिससे इसकी पुनर्प्राप्ति की जा सकती हो अथवा इसका स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार) से उपर्युक्त उल्लिखित प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण: 2024

विषयसूची

प्राचीन भारत का इतिहास

इकाई–I: सभ्यता के विभिन्न स्वरूप

अध्याय 1

भारतीय प्राक्-इतिहास (Indian Pre-History)....2

1.1 परिचय (Introduction)....2

1.2 पुरापाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व) [Paleolithic Age (500,000 BC to 10,000 BC)]....3

निम्न पुरापाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व – 50,000 ईसा पूर्व) [Lower Paleolithic (500,000 BC – 50,000 BC)]....3

उत्तर भारत (सोहन संस्कृति)....3

मध्य भारत (Central India)....3

दक्षिण भारत (मद्रास संस्कृति)....3

मध्य पुरापाषाण काल (50,000 ईसा पूर्व – 40,000 ईसा पूर्व) [Middle Paleolithic (50,000 BC & 40,000 BC)]....4

उच्च पुरापाषाण काल (40,000 ईसा पूर्व – 10,000 ईसा पूर्व) [Upper Paleolithic (40,000 BC & 10,000 BC)]....5

पुरापाषाण काल में कला (Art in the Paleolithic Age)....5

पुरापाषाण काल में समाज (Society in Paleolithic Age)....6

इस चरण का महत्त्व (Importance of this Phase)....6

इस चरण की सीमाएँ (Limitations of this Phase)....6

1.3 मध्य पाषाण काल (9,000 ईसा पूर्व – 4,000 ईसा पूर्व) [Mesolithic Age (9,000 BC – 4,000 BC)]....6

जीवन-निर्वाह का तरीका (Way of Living)....6

प्रमुख स्थल (Major Sites)....6

उपकरणों की प्रकृति (Nature of Tools)....7

मध्य पाषाण काल में कला (Art in Mesolithic Age)....8

मध्य पाषाण काल में समाज (Society in Mesolithic Age)....8

मध्य पाषाण काल का महत्त्व (Importance of Mesolithic Age)....8

मध्य पाषाण काल की सीमाएँ (Limitations of Mesolithic Age)....8

1.4 नवपाषाण काल (9000 – 1000 ईसा पूर्व) [Neolithic Age (9000 – 1000 BC)]....8

प्रमुख स्थल (Major Sites)....9

उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र (North-Western Zone)....9

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (North-Eastern Zone)....9

दक्षिणी क्षेत्र (Southern Zone)....9

प्रमुख उपकरण (Major Tools)....9

नवपाषाण काल का महत्त्व (Importance of Neolithic Age)....10

नवपाषाण काल की सीमाएँ (Limitations of the Neolithic Age)....10

1.5 ताम्रपाषाण काल (2800 ईसा पूर्व – 700 ईसा पूर्व) [Chalcolithic Age (2800 BC – 700 BC)]....10

प्रमुख स्थल (Major Sites)....10

प्रमुख उपकरण (Major Tools)....11

पशुओं का घरेलूकरण (Domestication of Animals)....11

कृषि एवं भोजन (Agriculture and Food)....11

ताम्रपाषाण काल में कला (Art in Chalcolithic Age)....11

ताम्रपाषाण काल में समाज (Society in Chalcolithic Age)....11

ताम्रपाषाण काल का महत्त्व (Importance of Chalcolithic Age)....11

ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों की सीमाएँ (Limitations of Chalcolithic Cultures)....11

कुछ महत्त्वपूर्ण खोजें (Some Important Discoveries)....12

अध्याय 2

सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization)....14

2.1 परिचय (Introduction)....14

2.2 भौगोलिक विस्तार (Geographical Extent)....14

2.3 सिंधु घाटी सभ्यता के चरण (Phases of Indus Valley Civilization)....15

2.4 खोज (Discovery)....16
2.5 विशेषताएँ (Features)....16
प्रशासन (Administration)....17
आर्थिक जीवन (Economic Life)....18
व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce)....19
बाट एवं माप (Weights and Measures)....20
सामाजिक जीवन (Social Life)....20
धार्मिक परंपराएँ (Religious Practices)....22
विज्ञान और प्रौद्योगिकी (Science and Technology)....23
2.6 हड़प्पा और समकालीन संस्कृतियाँ (Harappa and Contemporary Cultures)....24
2.7 महत्त्वपूर्ण स्थल (Important Sites)....25
हड़प्पा (Harappa)....25
मोहनजोदड़ो (Mohenjo-Daro)....25
वृहत् स्नानागार (Great Bath)....25
कालीबंगा (Kalibangan)....26
कोटदीजी (Kot-Diji)....26
लोथल (Lothal)....26
सुरकोटदा (Surkotda)....27
सुत्कागेंडोर (Sutkagen-Dor)....27
रोपड़ (Ropar)....27
आलमगीरपुर (Alamgirpur)....27
आमरी (Amri)....27
चन्हूदड़ो (Chanhu-daro)....28
बनावली (Banawali)....28
राखीगढ़ी (Rakhigarhi)....28
रंगपुर (Rangpur)....29
धौलावीरा (Dholavira)....29
2.8 सभ्यता के अंत से संबंधित सिद्धांत (End of Civilization Theories)....29
पतन के सिद्धांत (Theories of Decline)....30
भीषण बाढ़ और भूकंप (Massive Floods and Earthquakes)....30
सिंधु नदी के मार्ग में परिवर्तन (Shifting in the Course of Indus River)....30
घग्गर-हकरा नदी की बढ़ती शुष्कता तथा सूखा (Increased Aridity and Drying Up of Ghaggar-Hakra River)....30
आर्य आक्रमण का सिद्धांत (Aryan Invasion Theory)....31
क्षेत्र की पारिस्थितिकी में अनियमितता (Disturbed Ecology of the Region)....31

अध्याय 3

आर्य एवं आरंभिक ऋग्वैदिक चरण (Aryans and Early Rig Vedic Phase)....38
3.1 आर्य (Aryans)....38
3.2 सिद्धांत: आर्यों का वास-स्थान तथा प्रवास (Theories: Home and Migration of Aryans)....38
आर्यों का मूल निवास (Original Home of Aryans)....38
विदेशी मूल का सिद्धांत (Theory of Foreign Origin)....38
विदेशी मूल का समर्थन करने वाले तर्क (Arguments Supporting Foreign Origin)....39
ऋग्वेद – अवेस्ता संबंध (The Rig-Veda – Avesta Link)....40
आर्यों की भारतीय उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Indian Origin of Aryans)....40
आर्यों की भारतीय उत्पत्ति का समर्थन करने वाले तर्क (Theory of Indian Origin of Aryans)....40
3.3 आर्य: भारत में प्रवास, प्रसार एवं अंत: का प्रवेश मार्ग (Aryans: Route of Migration, Spread and Penetration in India)....41
प्रवास का मार्ग (Route of Migration)....41
काबुल घाटी एवं पंजाब से प्रवेश (Entry from Kabul Valley and Punjab)....41
भारत के आंतरिक क्षेत्रों में प्रवेश (Penetration Deep Inside India)....42
बंगाल का आर्यीकरण (Aryanization of Bengal)....42
दक्षिण में आर्य (Aryans in South)....42
3.4 आर्य प्रशासन (Aryans Administration)....42
राजनीतिक संगठन (Political Organization)....42
राजा की सहायता करने वाले पदाधिकारी (Functionaries Assisting King)....43
कबायली संगठन (Tribal Assembly)....43
सभा (Sabha)....44
समिति (Samiti)....44
सभा और समिति: एक तुलना (Sabha and Samiti: A Comparison)....44
कबायली संघर्ष (Tribal Conflicts)....44

3.5 अर्थव्यवस्था: वैदिक काल (Economic: Vedic Period)...45
अर्थव्यवस्था का स्वरूप (Nature of Economy)...........45
प्रमुख व्यवसाय एवं भूमि का स्वामित्व (Major Occupations and Ownership of Land) 45
उद्योग (Industry) 46
व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce)...........46
परिवहन एवं व्यापार का माध्यम (Transportation and Medium of Trade)...............46
विदेशी व्यापार (Overseas Trade) 46
3.6 आर्य समाज (Aryan Society) 47
पारिवारिक जीवन (Family Life) 47
सामाजिक जीवन (Social Life).................................47
समाज की प्रकृति (Nature of Society).....................47
महिलाओं की स्थिति (Position of Women) 48
सामाजिक विभाजन (Social Divisions).....................48
आर्यों का धार्मिक जीवन (Religious Life of Aryans)...49
3.7 यज्ञ या बलि अनुष्ठान (Yagnas or Sacrifices) 49
यज्ञ का उद्देश्य (Purpose of Yajna) 49
यज्ञों के प्रकार (Types of Yajnas)...........................50
यज्ञ करने का विशेषाधिकार (Prerogative to Perform a Yagna).......................50
3.8 इस चरण का महत्त्व (Importance of this Phase).........50
3.9 सीमाएँ (Limitations) 50

अध्याय 4

उत्तर वैदिक काल (Later Vedic Phase)............................56
4.1 परिचय (Introduction) 56
4.2 भौगोलिक विस्तार (Geographical Expanse) 56
4.3 व्यवस्थित विस्तार (Systematic Expansion).................57
4.4 विस्तार का कारण (Reason for Expansion) 57
4.5 राजनीतिक स्थिति (Political Condition).......................58
4.6 आर्थिक स्थिति (Economic Condition).......................59
4.7 सामाजिक स्थिति (Social Condition)..........................60
ब्राह्मणों की स्थिति (Position of Brahmans).............60
क्षत्रियों की स्थिति (Position of Kshatriyas) 60
वैश्यों की स्थिति (Position of Vaishyas)..................60
शूद्रों की स्थिति (Position of Kshudras) 60
महिलाओं की स्थिति (Position of Women) 60
4.8 धार्मिक आचरण (Religious Practices).......................62
4.9 वैदिक साहित्य (Vedic Literature).............................62
वेद (Vedas)...63
4.10 वैदिक दर्शन (Vedic Philosophy) 64
4.11 महाकाव्य (Epics) 65
रामायण (Ramayana)..65
महाभारत (Mahabharta)..65

इकाई – II: साम्राज्यों का सुदृढ़ीकरण

अध्याय 5

जैन धर्म और बौद्ध धर्म (Jainism and Buddhism)............69
5.1 नए धर्मों का उदय (Rise of New Religion) 69
5.2 नए धर्मों के उदय के कारण (Reasons for the Rise of New Religions).................69
समाज का चतुर्मुखी स्तरीकरण (Four-Fold Stratification of Society) 69
नई कृषि अर्थव्यवस्था का उदय (Rise of New Agricultural Economy)..................69
उत्तर-पूर्वी भारत में शहरों और व्यापार/वाणिज्य का विकास (Growth of Cities and Trade/ Commerce in North-Eastern India)....................69
भौतिक जीवन से सरल जीवन तक (Material Life to Simple Life)..............................70
भाषा (Language)..70
जिज्ञासा, तर्क-वितर्क और चर्चा (Curiosity, Debates and Discussions) 70
5.3 जैन धर्म (Jainism)..70
तीर्थंकर (Tirthankaras) 70
जैन धर्म के दो संप्रदाय (Two Sects of Jainism)........72
जैन धर्म का प्रसार (Spread of Jainism)..................72
जैन धर्म के प्रमुख अनुयायी (Main Followers of Jainism)................................72
जैन परिषद् (Jain Councils) 72
जैन साहित्य (Jain Literature) 72
जैन धर्म का योगदान (Contributions of Jainism) 73
जैन वास्तुकला (Jain Architecture)..........................73
व्यापार में योगदान (Contribution in Trade)..............73
सीमित प्रसार के कारण (Causes of Limited Spread) 73
पतन के कारण (Causes of Decline).......................73

5.4 बौद्ध धर्म (Buddhism)....74
गौतम बुद्ध (Gautama Buddha)....74
सामाजिक आदेश और विधान (Social Orders and Legislation)....74
शिक्षाएँ (Teachings)....75
बौद्ध धर्म के सिद्धांत (Doctrines of Buddhism)....75
आष्टांगिक मार्ग (मानव दुख के निवारण के लिए)....75
बौद्ध धर्म का प्रसार (Spread of Buddhism)....76
बौद्ध धर्म की प्रमुख विशेषताएँ (Special Features of Buddhism)....77
बौद्ध धर्म के संप्रदाय (Sects of Buddhism)....78
बौद्ध संगीति (Buddhist Councils)....78
प्रशासन (Administration)....79
बौद्ध साहित्य (Buddhist Literature)....79
बौद्ध धर्म का योगदान (भाषा, साहित्य, कला और व्यापार आदि) [Contribution of Buddhism (Language] literature, Art and Trade etc-)]....79
पतन के कारण (Causes of Decline)....80
महत्त्व एवं प्रभाव (Importance and Influence)....80
5.5 बौद्ध धर्म और जैन धर्म के बीच समानताएँ (Similarities between Buddhism and Jainism)....81
5.6 बौद्ध धर्म और जैन धर्म के बीच अंतर (Differences between Buddhism and Jainism)...81

अध्याय 6

महाजनपद (Mahajanapadas)....86
6.1 महाजनपदों का उदय (Rise of Mahajanapadas)....86
6.2 उदय के कारण (Reasons for Rise)....86
6.3 उदय के साथ परिवर्तन (Changes with the Rise)....86
6.4 प्राचीन भारतीय गणराज्य (Ancient Indian Republics)....87
6.5 सोलह महाजनपद (Sixteen Mahajanapadas)....87
6.6 महाजनपदों की अवस्थिति (Location of Mahajanapadas)....88
6.7 मगध साम्राज्य (Magadha Empire)....88
मगध साम्राज्य का उदय (Rise of Magadha Empire)....88
मगध के उदय के कारण (Reasons for the Rise of Magadha)....90

अध्याय 7

ईरानी तथा मकदूनियाई आक्रमण (Iranian and Macedonian Invasions)....92
7.1 ईरानी आक्रमण (Iranian Invasions)....92
7.2 पश्चिमोत्तर क्षेत्र का महत्त्व (Importance of North&West)....92
7.3 ईरानी संपर्क के प्रभाव (Influence of the Contacts)....92
7.4 सिकंदर का आक्रमण (Alexander's Invasion)....93
सिकंदर के आक्रमण का प्रभाव एवं महत्त्व (Effects and Importance of Alexander's Invasion)....93

अध्याय 8

मौर्य साम्राज्य (Mauryan Empire)....95
8.1 परिचय (Introduction):....95
8.2 चंद्रगुप्त मौर्य (322-297 ई.पू.) Chandragupta Maurya (322.297 BC)....95
8.3 चंद्रगुप्त मौर्य की राज्य संबंधी व्यवस्था (Imperial Organization of Chandragupta Maurya)....96
8.4 चाणक्य (Chanakya)....96
अर्थशास्त्र (Arthashastra)....97
8.5 बिंदुसार (297-272 ई.पू.) [Bindusara (297 BC – 272 BC)]....97
8.6 अशोक (Asoka)....97
अशोक का उदय (Rise of Asoka)....97
कलिंग युद्ध (Kalinga War)....97
कलिंग युद्ध का प्रभाव (Impact of Kalinga War)....97
अशोक की धम्म नीति (Asoka's Dhamma)....98
अशोक के अभिलेख (Asoka's Inscriptions)....99
लघु शिलालेख (Minor Rock Edicts)....99
स्तंभलेखों के निर्माण हेतु प्रयुक्त सामग्री (Sources of Pillar Stones)....100
अभिलेखों की भाषा (Language of Inscriptions)....100
अशोक के साम्राज्य का भौगोलिक विस्तार (Extent of Asoka's Empire)....100
8.7 आंतरिक नीति तथा बौद्ध धर्म (Internal Policy and Buddhism)....100
8.8 उत्तर मौर्य (Later Mauryas)....102

8.9 मौर्य प्रशासन (Mauryan Administration)................102
मंत्रिपरिषद् (Council of Ministers).........................102
सेना (Army)...103
प्रशासन...103
कर प्रशासन (Tax Administration).........................103
8.10 आर्थिक स्थिति (Economic Conditions).......................................104
8.11 सामाजिक स्थिति (Social Conditions) 104
8.12 शिल्पकला एवं वास्तुकला (Art and Architecture) 104
8.13 मौर्य साम्राज्य की जानकारी के स्रोत (Sources of Mauryan Empire)...........................105
पुरातात्त्विक स्रोत (Archaeological Sources)...........106
8.14 भौतिक संस्कृति (Material Culture) 106
8.15 मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण (Reasons for Decline).....................................106
8.16 मौर्य साम्राज्य का महत्त्व (Importance of Mauryan Empire) 107
8.17 मौर्य साम्राज्य की सीमाएँ/कमियाँ (Limitation of Mauryan Empire) 107
8.18 बाद के साम्राज्य/राज्य (Later kingdoms)..107

इकाई – III: विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियाँ

अध्याय 9

मौर्योत्तर काल (Post Mauryan Times).............................111
9.1 परिचय (Introduction) 111
9.2 विदेशी राजवंश (भारत-मध्य एशिया संबंध) [Central Asian Contacts with India]..................112
हिंद-यवन (Indo Greeks)....................................112
शक (सीथियन) (Sakas or Scythians).................112
क्षत्रप प्रणाली (60 ईसा पूर्व – दूसरी शताब्दी ईस्वी) [Satrap System (60 BC – 2nd Century AD)] 113
पहलव (पार्थियन) (Parthians)...............................113
कुषाण (50-230 ईस्वी) [Kushans (50 – 230 AD)] 113
9.3 मध्य एशिया से संपर्क के प्रभाव (Central Asian Contacts: Impact)....................114
9.4 राजनीतिक-प्रशासनिक स्थिति (Political-administrative Situation) 114
9.5 धार्मिक स्थिति (Religion).....................................114
9.6 विभाजन (Disintegration).......................................114
9.7 भारतीय राजवंश (Indian Dynasties) 114
शुंग वंश (185 ईसा पूर्व ख 75 ईसा पूर्व) [Shunga Dynasty] 114
कण्व वंश (75 ईसा पूर्व ख 30 ईसा पूर्व) [Kanva Dynasty]..116
महामेघवाहन या चेदि वंश (Mahameghavahana or Chedi Dynasty of Kalinga)..116
सातवाहन वंश (पहली शताब्दी ईसा पूर्व – आरंभिक तीसरी शताब्दी ईस्वी) [Satvahanas (1st Century BCE – Early 3rd Century AD)].............118
9.8 विदेशी व्यापार (Foreign Trade)............................119
9.9 मौर्योत्तर काल का महत्त्व (Importance of this Phase) 120
9.10 मौर्योत्तर काल की सीमाएँ (Limitations of this Phase) 120

अध्याय 10

गुप्तकाल (Gupta Period)...124
10.1 परिचय (Introduction) 124
10.2 गुप्त वंश का उदय (Rise of Gupta Dynasty)..........124
10.3 प्रमुख गुप्त शासक व उनका शासनकाल (Prominent Gupta Rulers and their Reign)........124
चंद्रगुप्त-I : 319-335 ईस्वी (Chandragupta-I : 319-335 AD) 125
समुद्रगुप्त : 335-380 ईस्वी (Samudragupta : 335-380 AD).........................125
चंद्रगुप्त-II 'विक्रमादित्य': 380-415 ईस्वी (Chandragupta-II 'Vikramaditya' : 380-415 AD)...126
कुमारगुप्त-I 'महेंद्रादित्य': 415-455 ईस्वी (Kumargupta-I 'Mahendraditya': 415-455 AD) 127
स्कंदगुप्त 'क्रमादित्य': 455-467 ईस्वी (Skandgupta 'Kramaditya' : 455-467 AD)........127
उत्तरवर्ती गुप्त शासक (Later Guptas) 127
10.4 गुप्तकालीन राजव्यवस्था (Gupta's Polity) 127
शक्ति का विकेंद्रीकरण एवं हस्तांतरण (Decentralization and Devolution of Power) 127
साम्राज्यिक/शाही सरकार (Imperial Government) 129

10.5 गुप्त प्रशासन (Gupta Administration)....................129

केंद्रीय प्रशासन (Central Administration) 129

सैन्य प्रशासन Administration at (Military Level) 131

न्यायिक प्रशासन (Judicial System)........................131

राजस्व प्रशासन (Revenue Administration) 131

भूमि अनुदान व्यवस्था (Land Grant System)...........132

10.6 गुप्तकालीन अर्थव्यवस्था (Gupta's Economy) 132

परिचय (Introduction) 132

कृषि (Agriculture)...132

श्रेणी व्यवस्था (Guild System) 132

आर्थिक विनियमन (Economic Regulation) 133

मुद्रा (Currency)...133

सिक्कों की कमी (Paucity of Coins)......................134

व्यापार एवं वाणिज्य (Trade and Commerce).........137

व्यापार की प्रकृति (Nature of Trade)......................137

व्यापार का पतन (Decline of Trade) 138

10.7 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (Science and Technology) 138

खगोल विज्ञान (Astronomy)..................................138

गणित (Mathematics) 138

धातुकर्म (Mettalurgy) 138

10.8 गुप्तकालीन समाज (Gupta's Society).....................139

धर्म (Religion)...139

सामाजिक व्यवस्था (Social System).......................139

भू-स्वामी वर्ग का उदय (Rise of Landed Class).....140

10.9 गुप्तकालीन कला एवं वास्तुकला (Gupta Art and Architecture)............................140

10.10 गुप्तकालीन साहित्य (Gupta Literature)..141

10.11 गुप्तकालीन अभिलेख (Gupta Inscription) 142

10.12 हूण आक्रमण (The Hunas Invasion) 142

10.13 गुप्त साम्राज्य का विघटन (Decline of the Gupta Empire)..........................143

10.14 गुप्त साम्राज्य का महत्त्व (Significance of the Gupta Empire) 144

अध्याय 11

गुप्तोत्तर काल (Post Guptas Period) 148

11.1 परिचय (Introduction) 148

11.2 मौखरि वंश (Maukhari Dyanasty) 148

11.3 नाग वंश (Naga Dynasty)....................................148

11.4 माघ वंश (Magha Dynasty)................................148

11.5 वाकाटक वंश (Vakataka Dynasty) 148

प्रवरपुर-नंदीवर्धन शाखा (Pravarpura – Nandivardhana Branch).............149

वत्सगुल्म शाखा (Vatsagulma Branch)..................149

वाकाटकों का पतन (Decline of Vakatakas) 150

वाकाटक वंश की विरासत (Legacy of Vakataka Dynasty) 150

11.6 पुष्यभूति वंश (Pushyabhuti Dynasty)...................150

11.7 हर्षवर्धन (Harshavardhana)................................151

परिचय (Introduction) 151

राजव्यवस्था (Polity)..151

प्रशासन (Administration)....................................151

धर्म (Religion)..152

हर्षकालीन साहित्य (Literature of Harsha Period)...153

हर्ष के शासन के दौरान बौद्ध धर्म (Buddhism during Harsha's Rule)....................153

11.8 हर्ष के दौरान नालंदा (Nalanda during Harsha).................................154

11.9 हर्षकालीन अर्थव्यवस्था (Harsha's Economy)..154

11.10 हर्षकालीन समाज (Harsha's Society)..154

11.11 हर्ष के शासनकाल संबंधी ह्वेनसांग का विवरण (Hiuen Tsang Account of Harsha's Rule) 155

राजव्यवस्था (Polity)..155

प्रशासन (Administration)....................................155

धर्म (Religion)..155

अर्थव्यवस्था (Economy) 155

समाज (Society)..156

शिक्षा व्यवस्था (Education System)......................156

11.12 आभीर वंश (Abhiras Dynasty)............................156

11.13 महिशक के शक (Sakas of Mahisaka)..156

11.14 त्रैकूटक वंश (Traikutakas Dynasty)......................156

11.15 राष्ट्रकूट वंश (Rashtrakutas Dynasty)..................157

राष्ट्रकूटों का प्रशासन (Administration of Rashtrakutas) 158

अर्थव्यवस्था (Economy) 158

साहित्य (Literature)..159

राष्ट्रकूटों की विरासत तथा योगदान (Contribution and Legacy of Rashtrakutas)......159

11.16 कलचुरि वंश (Kalachuris Dynasty) 160

उत्तरी शाखा (Northern Branch)............................160

दक्षिणी शाखा (Southern Branch) 160

बसवन्ना तथा वचन (Basavana and Vachanas).....161

11.17 गंग वंश (Gangas Dynasty) 161

पश्चिमी गंग वंश (Western Ganga Dynasty).........161

पूर्वी गंग वंश (Eastern Ganga Dynasty) 162

11.18 बंगाल का पाल वंश (Pala Dynasty of Bengal) 162

पाल शासकों की विरासत (Legacy of Palas)...........163

पालों का प्रशासन (Administration of Palas) 163

पालों की राजव्यवस्था (Polity of Palas) 164

11.19 सेन वंश (Sena Dynasty)....................................164

सेन वंश की विरासत (Legacy of Sena Dynasty)....164

11.20 गुप्तोत्तर काल की सीमाएँ/कमियाँ (Limitations of Later Gupta Period) 164

11.21 गुप्तोत्तर काल का महत्त्व (Significance of Later Gupta Period)................165

अध्याय 12

दक्षिण भारत (South India)...168

12.1 प्रारंभिक समय/काल से महापाषाणयुगीन संस्कृति तक (Early Times to Megalithic Culture) 168

महापाषण काल से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य (Important facts related to Megalithic period) ..168

12.2 संगम युग (Sangam Era) 169

परिचय (Introduction) 169

तीन राजवंश (Three Dynasties)...........................169

प्रारंभिक पांड्य (Early Pandyas)...........................171

संगम राजव्यवस्था (Sangam Polity)........................171

संगम प्रशासन (Sangam Administration).................171

संगम राजस्व प्रणाली (Sangam Revenue Systems) 172

संगम अर्थव्यवस्था (Sangam Economy)...................172

संगमकालीन समाज (Sangam Society) 173

महिलाओं की स्थिति (Position of Women).............173

संगमयुगीन धार्मिक मान्यताएँ (Sangam Religious Beliefs) 174

ब्राह्मणवाद का आरंभ (Beginning of Brahmanism) .174

संगम साहित्य (Sangam Literature).......................174

संगम कला और स्थापत्य कला (Sangam Art and Architecture) 175

संगम युग की समाप्ति (End of Sangam Age).........176

संगम काल का महत्त्व (Importance of the Period) .176

12.3 बादामी के चालुक्य (543 ईस्वी – 755 ईस्वी) [Chalukyas of Badami (543 AD – 755 AD)] 176

परिचय (Introduction) 176

महत्त्वपूर्ण शासक (Important Rulers)....................176

राजव्यवस्था (Polity)..177

प्रशासन (Administration)....................................178

धर्म (Religion)...178

राजस्व (Revenue)...179

अर्थव्यवस्था (Economy) 179

समाज (Society)...179

साहित्य (Literature)..179

कला और स्थापत्य कला (Art and Architecture) 180

राजवंश का महत्त्व (Importance of the Dynasty)....181

12.4 कल्याणी के चालुक्य (973 ईस्वी – 1200 ईस्वी) [Chalukyas of Kalyani (973 AD – 1200 AD)].....181

परिचय (Introduction) 181

महत्त्वपूर्ण शासक (Important Rulers)....................181

राजव्यवस्था (Polity)..182

प्रशासन (Administration)....................................183

धर्म (Religion)...183

अर्थव्यवस्था (Economy) 183

समाज (Society)...184

साहित्य (Literature)..184

कला और स्थापत्य कला (Art and Architecture) 184

राजवंश का महत्त्व (Importance of the Dynasty)....185

12.5 कांची के पल्लव (Pallavas of Kanchi) 185
परिचय (Introduction) 185
पल्लवः एक पृष्ठभूमि (Pallavas: A Background) ... 185
कुछ महत्त्वपूर्ण शासक (Some Important Rulers) 186
राजव्यवस्था (Polity) 187
प्रशासन (Administration) 187
अर्थव्यवस्था (Economy) 188
समाज (Society) 188
धर्म (Religion) 189
साहित्य (Literature) 189
कला और स्थापत्य कला (Art and Architecture) 190
पल्लव शासन का महत्त्व
(Importance of the Pallava Rule) 191

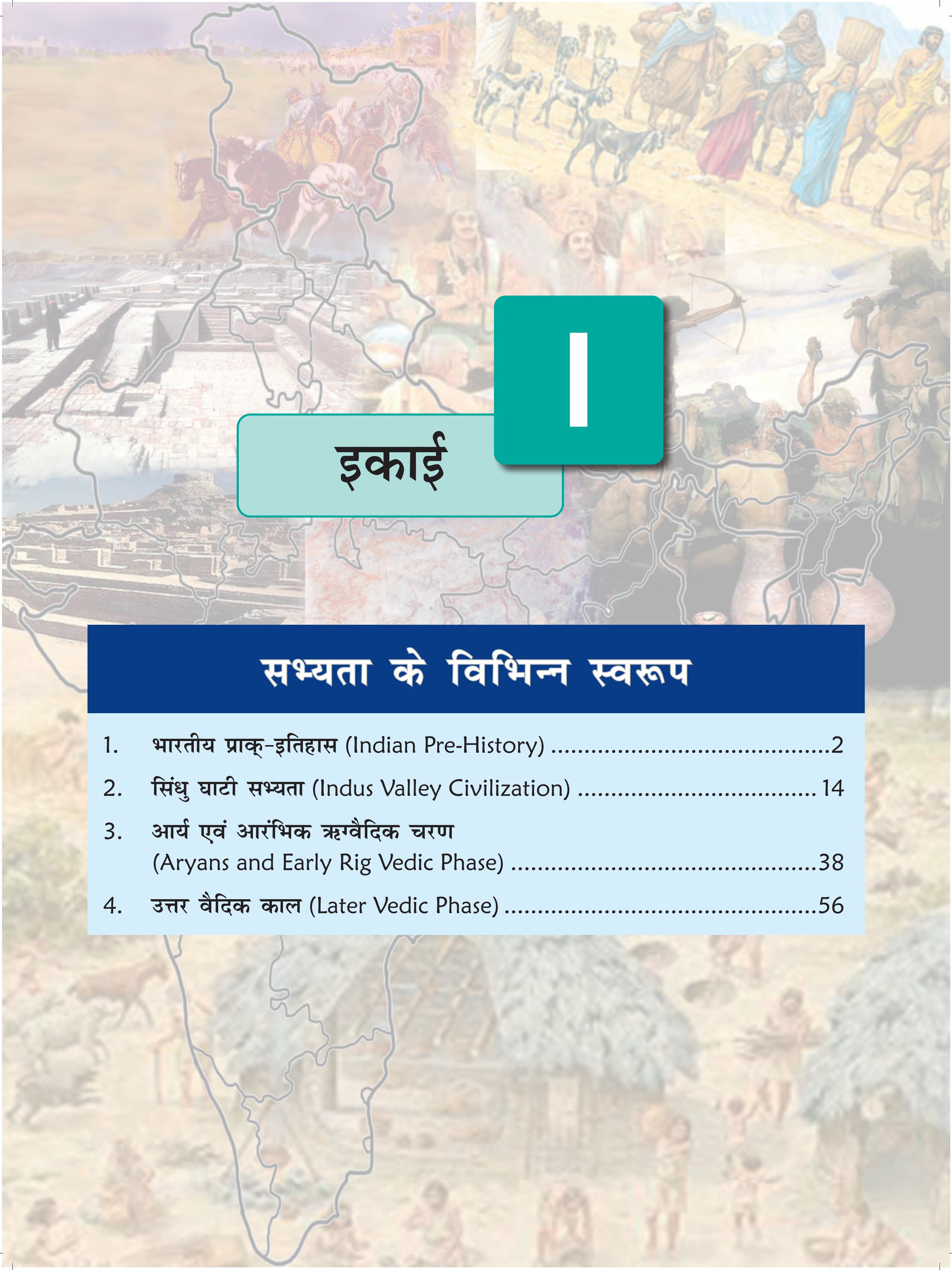

इकाई I

सभ्यता के विभिन्न स्वरूप

1. भारतीय प्राक्-इतिहास (Indian Pre-History) 2
2. सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization) 14
3. आर्य एवं आरंभिक ऋग्वैदिक चरण (Aryans and Early Rig Vedic Phase) 38
4. उत्तर वैदिक काल (Later Vedic Phase) 56

अध्याय
1

भारतीय प्राक्-इतिहास
(Indian Pre-History)

1.1 परिचय (Introduction)

'प्राक्-इतिहास' से आशय, 'इतिहास से पहले' से है। इस काल का उपयोग उस समय और घटनाओं, दोनों को दर्शाने के लिए किया जाता है, जिसके पहले मनुष्य के पास लेखन की कोई लिपि नहीं थी। रॉबर्ट ब्रूस फूटे, जो एक ब्रिटिश भू-विज्ञानी और पुरातत्ववेत्ता थे, को भारतीय प्रागैतिहासिक काल का जनक माना जाता है। वह भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण से जुड़े थे तथा उन्होंने पाषाण काल के पुरावशेषों का दस्तावेज़ीकरण किया था। तीन मुख्य युगों, अर्थात् पाषाण काल, कांस्य काल और लौह काल की वर्तमान पुरातात्विक प्रणाली (Archaeological System) 1820 में डेनिश पुरातत्वविद् क्रिश्चियन जर्गेनसन थॉम्पसन (Christian Jurgenson Thompson) द्वारा विकसित की गई थी।

विभिन्न प्रकार के उपकरणों तथा तकनीकों के आधार पर प्रागैतिहासिक काल में मानव विकास के चरणों को पुरापाषाण या प्राचीन पाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व), मध्य पाषाण काल (9,000 ईसा पूर्व से 4,000 ईसा पूर्व), नव पाषाण काल (9000 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व) तथा ताम्र पाषाण काल (2800 ईसा पूर्व से 700 ईसा पूर्व) के रूप में वर्णित किया गया है। इन युगों के दौरान, मानव लिखना नहीं जानता था तथा बहुत ही आदिम जीवन-शैली में रहता था। इसके अलावा, 10,000 ईसा पूर्व के बाद के मानव जीवाश्म शायद ही उपलब्ध हों, इसलिए हमें उनके द्वारा उपयोग की गई कलाकृतियों (Artefacts) से उनकी जीवन-शैली और संस्कृति का अनुमान लगाना होगा। ये कलाकृतियाँ विभिन्न उत्खननों (Escavations) में पाई जाती हैं तथा फिर विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा उनका अध्ययन किया जाता है। इन कलाकृतियों में सामान्यतः उपकरण, हथियार, मिट्टी के बर्तन, कला, शिल्प और अन्य अवशेष शामिल होते हैं, जो बड़े पैमाने पर पत्थरों से बने होते हैं और यही कारण है कि प्रागैतिहासिक संस्कृतियों (Prehistoric Cultures) को पाषाणिक संस्कृतियों (Lithic Cultures) के रूप में जाना जाता है।

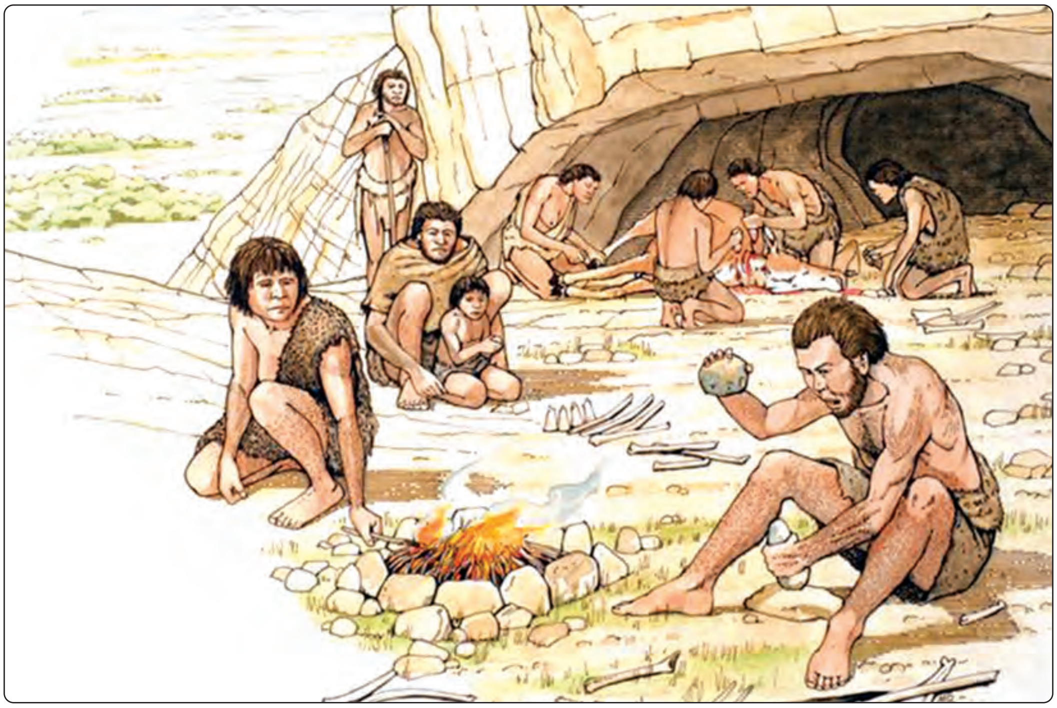

प्रारंभिक पाषाणकालीन जीवन का निरूपण

1.2 पुरापाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व) [Paleolithic Age (500,000 BC to 10,000 BC)]

पुरापाषाण शब्द ग्रीक शब्द पैलियो और लिथिक से मिलकर बना है, जिसमें 'पैलियो' का अर्थ पुराना और 'लिथिक' का अर्थ पत्थर है। इसलिए, पुरापाषाण काल शब्द पुराने पाषाण काल को संदर्भित करता है। यह एक लंबी अवधि में विस्तृत है और इसमें कई जलवायु परिवर्तन हुए हैं।

पुरापाषाण काल के प्रकार: लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले प्रस्तर/पत्थर के औज़ारों के प्रकार के अनुसार, इस काल को निम्नलिखित तीन उप-कालों में वर्गीकृत किया गया है:

पुरापाषाण काल के प्रकार	
प्रकार	**समयावधि**
प्रारंभिक/निम्न	500,000 ईसा पूर्व – 50,000 ईसा पूर्व
मध्य	50,000 ईसा पूर्व – 40,000 ईसा पूर्व
उच्च	40,000 ईसा पूर्व – 10,000 ईसा पूर्व

निम्न पुरापाषाण काल (500,000 ईसा पूर्व – 50,000 ईसा पूर्व) [Lower Paleolithic (500,000 BC – 50,000 BC)]

यह मानव अस्तित्व का प्रारंभिक काल है तथा प्रथम हिमकाल (गुंज ग्लेशिएशन) के अंत से लेकर तीसरे हिमकाल (रिस ग्लेशिएशन) के अंत तक अस्तित्व में था। इस चरण के दौरान जलवायु चरम थी और मनुष्य को जंगली जानवरों के साथ-साथ प्रकृति से भी संघर्ष करना पड़ा। भारतीय निम्न पुरापाषाण संस्कृति को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है, यदि हम उन स्थलों का सर्वेक्षण करें, जहाँ से उपकरण पाये गए हैं और फिर इन उपकरणों के संभावित उपयोग व उन्हें विकसित करने में नियोजित तकनीकों पर नज़र डालें। अब हम स्थलों को बेहतर ढंग से समझने के लिए उन्हें भौगोलिक रूप से विभाजित करेंगे।

उत्तर भारत (सोहन संस्कृति)

- इस चरण के स्थल, पंजाब में सोन या सोहन नदी की घाटी में पाए जाते हैं, जो वर्तमान पाकिस्तान में है। कश्मीर में कई स्थल पाए जाते हैं और इस चरण के उपकरण उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर जिले की बेलन घाटी में भी पाय गए हैं।
- उत्तर भारत में इस काल के मुख्य उपकरण- खंडक (Chopper), हाथ की कुल्हाड़ी (Hand Axes) और विदारक (Cleavers) थे। ये काटने के उपकरण कंकड़-पत्थरों से तैयार किये जाते थे।
- उपकरण खुरदरे और भारी होते थे, जो पत्थर के किनारों को काटकर बनाए जाते थे। इन उपकरणों का उद्देश्य पेड़ों की छाल और जानवरों की खालें प्राप्त करना था।

मध्य भारत (Central India)

इस क्षेत्र में मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान शामिल हैं। नर्मदा नदी का तट वह महत्त्वपूर्ण पथ है, जिसके किनारे पर स्थल पाये गए हैं। महत्त्वपूर्ण स्थल इस प्रकार हैं:

- **भीमबेटका:** यह मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में नर्मदा नदी से लगभग 40 किलोमीटर उत्तर में लगभग 700 गुफ़ाओं और चट्टानी आश्रयों का एक समूह है।
- **आदमगढ़:** यह होशंगाबाद में नर्मदा नदी से कुछ किलोमीटर दक्षिण में एक चट्टानी आश्रय स्थल है।
- **नगरी और चित्तौड़गढ़:** ये दोनों कलाकृतियों से समृद्ध हैं और राजस्थान में स्थित हैं।
- **डीडवाना:** यह राजस्थान का एक और महत्त्वपूर्ण स्थल है, जो शुष्क क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र विभिन्न प्रकार के खंडक और अन्य काटने वाले उपकरणों के साथ खंडक उपकरणों का मिश्रण प्रदर्शित करता है।

दक्षिण भारत (मद्रास संस्कृति)

इस क्षेत्र में तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र शामिल हैं। इनमें से केरल में अब तक कोई भी निम्न पुरापाषाणकालीन कलाकृति नहीं मिली है।

- **तमिलनाडु:** मद्रास के पास कोर्तालयार नदी पर अत्तिरमपक्कम और वदामदुरै।
- **कर्नाटक:** किब्बानहल्ली, मालप्रभा और घाटप्रभा बेसिन, अनागवाड़ी और शोरापुर दोआब।
- **आंध्र प्रदेश:** कुरनूल जिले में गुंडलकम्मा नदी का तट, कृष्णा नदी पर नागार्जुनकोंडा।
- **महाराष्ट्र:** नासिक, नवेसा और पुणे।

दक्षिण भारतीय स्थलों में प्रमुख रूप से उपकरण के रूप में हाथ की कुल्हाड़ियाँ और विदारक (Hand axes and cleavers) पाए जाते हैं। उनके उचित उपयोग का अभी तक पता नहीं चल पाया है, लेकिन कुछ अनुमान लगाए जा सकते हैं।

उत्तर के काटने के औज़ारों से पता चलता है कि सोहन लोग साधारण भोजन संग्रहकर्ता थे। दक्षिणी भारत की हाथ की कुल्हाड़ियाँ बहुउद्देश्यीय उपकरण थीं, जिनका उपयोग शिकार और जड़ें खोदने के लिए किया जा सकता था।

काटने के उपकरण

भारतीय प्राक्-इतिहास: महत्त्वपूर्ण तथ्य (Indian Pre-History: Important Facts)

	प्रारंभिक (निम्न)	मध्य	उत्तरवर्ती (उच्च)	मध्य पाषाण	नवपाषाण	ताम्रपाषाण
तकनीकी		शल्क उपकरण	चकमक पत्थर	सूक्ष्म पाषाणिक उपकरण	पॉलिशदार उपकरण	फलक तथा शल्क उपकरण
प्रयुक्त प्रस्तर	क्वार्टजाइट	क्वार्टजाइट	चर्ट, जैस्पर	अर्ध-कीमती पत्थर	डाइक, बेसाल्ट, डोलोमाइट	चौलेडोनी और चर्ट जैसी सिलिकायुक्त सामग्री तांबे और कांसे के औज़ारों का उपयोग भी सीमित पैमाने पर हुआ।
व्यवसाय	आखेट, भोजन एकत्र करना और मत्स्यन	आखेट, भोजन एकत्र करना और मत्स्यन	आखेट, भोजन एकत्र करना और मत्स्यन। होमो सेपियंस का आगमन।	आखेट, भोजन एकत्र करना और मत्स्यन। बाद के चरण में वे जानवरों को पालतू बनाना आरंभ करते हैं।	आखेट, भोजन एकत्रण और मत्स्यन का अभ्यास किया गया, नियमित कृषि आरंभ हुई। छोटे-छोटे गाँवों में बसे, खाद्य उत्पादन युग। मेहरगढ़-गेहूँ और कपास। मिर्जापुर-चावल की खेती।	निर्वाह कृषि, पशुपालन, कपास की खेती मेहरगढ़ के साथ-साथ सिंधु घाटी सभ्यता की मुख्य विशेषता थी। चावल की खेती का सबसे पहला साक्ष्य बेलन घाटी से मिला है। प्रस्तर आधारित मध्य पुरापाषाणिक उद्योग राजस्थान के दक्षिणी थार रेगिस्तान में स्थित था और इसे लूनी उद्योग कहा जाता था। पुरापाषाण और मध्यपाषाण युग की गुफा चित्रों में सबसे आम पशु हिरण था। राजस्थान में गिलुंड के लोग ईंटों के प्रति जागरूक नहीं थे। केला, नारियल, सुपारी आदि लगभग 2000 ईसा पूर्व दक्षिण-पूर्व एशिया से आए थे।
स्थल	सोन या सोहन घाटी, पंजाब, बेलन घाटी, मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश (इलाहाबाद के पास)। डीडवाना, राजस्थान भीमबेटका, मध्य प्रदेश	भूगोल सामान्यत: निम्न पुरापाषाणकालीन स्थलों से मिलता है।	गुजरात टीलों का उच्च स्तर। आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य मध्य प्रदेश, दक्षिण उत्तर प्रदेश, भीमबेटका गुफाओं का उपयोग आश्रय स्थल के रूप में किया जाता था।	आदमगढ़, मध्य प्रदेश और बागोर, राजस्थान - जानवरों को पालतू बनाने का सबसे प्रारंभिक साक्ष्य। नमक झील, सांभर के निक्षेप पौधों की खेती का संकेत देते हैं।	**उत्तर** कश्मीरी-गरतावास, चीनी मिट्टी की वस्तुएँ, पत्थर और हड्डी के औज़ारों की विविधता तथा सूक्ष्म पाषाणिक उपकरणों की अनुपस्थिति। बुर्जहोम, गुफकराल, बिहार-चिरांद **दक्षिण** गोदावरी के दक्षिण में **पूर्व** असम, गारो पहाड़ियाँ	ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों के केंद्र राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के अर्धशुष्क क्षेत्रों में विकसित हुए। उनमें से कुछ अहार, गिलुंड, नागदा, नवादाटोली, एरण, प्रभास, रंगपुर, प्रकाश, दैमाबाद और इनामगाँव थे।
शवाधान/कब्र					बुर्जहोम- पालतू कुत्तों को उनके पालकों/मालिकों के साथ दफ़नाया गया।	पश्चिमी महाराष्ट्र में बड़े स्तर पर बच्चों की कब्रें।
मृदभांड	कोई मृदभांड नहीं मिला।				मिट्टी के बर्तनों का प्रथम संदर्भ। बुर्जहोम-अपरिष्कृत भूरे मृदभांड। इस युग में हाथ से बने मिट्टी के बर्तन मिले हैं। बाद के काल में-पैर से चलने वाले पहिए का भी उपयोग हुआ है। इसमें काले-जले हुए बर्तन, ग्रेवेयर और मैट-प्रेस्ड बर्तन शामिल हैं।	मिट्टी के बर्तन लाल से लेकर गहरे भूरे और काले, चित्रमय लाल और काले एवं पॉलिशदार लाल रंग के थे।
चित्रकारी	मध्य प्रदेश में भीमबेटका, उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी और नर्मदा घाटी में तीनों चरणों से संबंधित प्रागैतिहासिक कला है।					

अध्याय
2

सिंधु घाटी सभ्यता
(Indus Valley Civilization)

2.1 परिचय (Introduction)

तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मध्य में एक शहरी सभ्यता का उदय हुआ, जिसे सिंधु या हड़प्पा सभ्यता (2750–1750 ईसा पूर्व) कहा जाता है। सभ्यता की खोज सबसे पहले 1921 में पाकिस्तान के पश्चिमी पंजाब प्रांत में स्थित हड़प्पा स्थान पर होने के कारण इसे हड़प्पा सभ्यता कहा जाने लगा। इसकी खोज दयाराम साहनी और राखलदास बनर्जी ने की थी।

2.2 भौगोलिक विस्तार (Geographical Extent)

'सभ्यता का केंद्र' (Epicenter of the civilization) वर्तमान पाकिस्तान और उत्तर-पश्चिमी भारत में था। वहीं से सभी दिशाओं में सभ्यता का विकास हुआ। सामान्यत: इतिहासकार मानते हैं कि हड़प्पा, घग्गर और मोहनजोदड़ो की धुरी सभ्यता के मुख्य क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है, क्योंकि अधिकांश बस्तियाँ इसी क्षेत्र में हैं तथा इनमें बहुत समानताएँ दिखती हैं। सभ्यताओं का विस्तृत क्षेत्र एक त्रिकोणीय क्षेत्र बनाता था, जिसका क्षेत्रफल लगभग 1.299. 600 वर्ग किलोमीटर था।

बलूचिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र में मकरान तट पर स्थित सुरकोटदा और सुत्कागेंडोर इस सभ्यता की पश्चिमी सीमाएँ थीं। उत्तर प्रदेश के गंगा-यमुना दोआब में स्थित बड़गाँव, मानपुर और आलमगीरपुर सिंधु घाटी सभ्यता की पूर्वी सीमाएँ थीं। भारत में सभ्यता की उत्तरी सीमाएँ जम्मू के मांडा और पंजाब के रोपड़ शहरों में थीं। सभ्यता की दक्षिणी सीमाएँ महाराष्ट्र के दैमाबाद और गुजरात के भगतराव स्थानों तक थीं। गुजरात में कच्छ और काठियावाड़ के क्षेत्रों में हड़प्पा की बस्तियाँ विखंडित हो गईं।

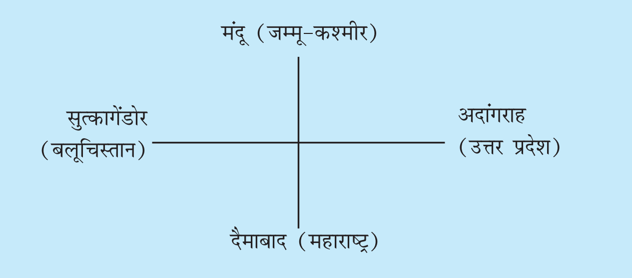

मोहनजोदड़ो के अवशेष

अध्याय
3

आर्य एवं आरंभिक ऋग्वैदिक चरण
(Aryans and Early Rig Vedic Phase)

3.1 आर्य (Aryans)

सामान्यत: स्वीकृत विचारों के अनुसार, लगभग 2000 ईसा पूर्व तक पोलैंड से लेकर मध्य एशिया तक की वृहत् स्टेपी भूमि पर अर्ध-खानाबदोश बर्बर (Semi-nomadic barbarians) लोगों का निवास था, जो लंबे कद के, तुलनात्मक रूप से गोरे तथा अधिकांशत: लंबे सिर वाले लोग थे। दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के आरंभिक चरण में चाहे जनसंख्या का दबाव हो, चारागाह भूमि की शुष्कता (Desiccation of pasture lands) हो, या दोनों कारण हों, ये लोग आगे बढ़ रहे थे। वे स्थानीय समुदायों/लोगों पर विजय प्राप्त करते हुए समूहों में पश्चिम, दक्षिण एवं पूर्व की ओर चले गए।

मैक्स मूलर

कुछ सिद्धांतों से पता चलता है कि 2000 ईसा पूर्व के बाद की शताब्दियों में उत्तर-पश्चिम भारत पर पश्चिम की कुछ जनजातियों द्वारा आक्रमण किया गया था, जिन्होंने अंतत: उत्तरी भारत के बड़े हिस्से पर नियंत्रण कर लिया था। भारत में आकर बसने वाले आर्यों की ये शाखाएँ 'इंडो-आर्यन' (Indo-Aryans) कहलाती हैं। भारत में आर्यों के बारे में भारत-यूरोपीय भाषाओं (Indo-European languages) के सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद से पता चलता है। आर्य लोग इंडो-यूरोपीय भाषाएँ बोलते थे, जो वर्तमान में पूरे यूरोप, ईरान और भारतीय उप-महाद्वीप के बड़े हिस्से में परिवर्तित रूपों में प्रचलित हैं।

प्रारंभ में संस्कृत शब्द 'आर्य' एक सम्मानित परिवार से संबंधित कुलीन व्यक्ति को दर्शाता था। आर्य शब्द का अर्थ सामान्यत: एक नस्ल से लिया जाता है, लेकिन वास्तव में यह लोगों की तुलना में एक भाषा का नाम है। इसलिए प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्स मूलर के अनुसार आर्य शब्द का अर्थ नस्ल के बजाय भाषा से है। आर्य भाषा को बोलने वाले लोग आर्य कहलाए।

3.2 सिद्धांत: आर्यों का वास-स्थान तथा प्रवास (Theories: Home and Migration of Aryans)

आर्यों के मूल निवास (Original Homeland) को लेकर इतिहासकारों के बीच काफ़ी विवाद रहा है। मूल आर्यों के भारतीय या विदेशी होने का प्रश्न उनके मूल निवास से जुड़ा हुआ है।

आर्यों का मूल निवास (Original Home of Aryans)

आर्यों के मूल निवास स्थान के संबंध में दो सिद्धांत हैं:

1. **आर्यों की विदेशी उत्पत्ति** (Foreign Origin of Aryans): ऐसा माना जाता है कि इंडो-आर्यन (Indo-Aryans) भारत के बाहर से आए तथा भारतीय उप-महाद्वीप, विशेष रूप से आधुनिक अफ़ग़ानिस्तान, भारत, पाकिस्तान और नेपाल में आंतरिक क्षेत्रों तक बस गए।
2. **आर्यों की भारतीय उत्पत्ति का सिद्धांत** (Theory of Indian Origin of the Aryans): एक और संभावना है कि भारत आर्यों का प्राथमिक निवास है तथा बाद में वे विदेशों में जाकर बस गए।

आर्यों के विदेशी और भारतीय मूल, दोनों के सिद्धांतों पर नीचे चर्चा की गई है:

विदेशी मूल का सिद्धांत (Theory of Foreign Origin)

"आर्यों की विदेशी उत्पत्ति" (Foreign origin of Aryans) के प्रवासन सिद्धांत के अनुसार, आर्य विदेशी थे और वे प्राचीन काल में भारत आए थे। इससे जुड़े निम्नलिखित सिद्धांत हैं:

1. डॉ. जाइल्स और प्रो. मैकडॉनेल द्वारा प्रतिपादित ऑस्ट्रो-हंगेरियन सिद्धांत (Austro-Hungarian theory), डेन्यूब नदी (दक्षिण-पूर्व यूरोप) के तटों को आर्यों का मूल निवास मानता है।
2. ऋग्वेद में कुछ प्राकृतिक घटनाओं (Natural Phenomena); जैसे- छह महीने की दीर्घ संध्या और दिन एवं रात आदि के वर्णन से लोकमान्य तिलक इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि आर्यों का मूल निवास उत्तरी ध्रुव (North Pole) के आस-पास के